कृष्ण को जगद्गुरु क्यों कहा जाता है?

क्या द्वापर युग में कृष्ण के चरित्र का सही मूल्याकंन हो सका? क्या आने वाले युग में कृष्ण चरित्र को जानकर उन्हें उचित स्थान दिया गया? केवल भक्ति रस से 'कृष्ण-कृष्ण' कहने से ही श्रीकृष्ण का स्वरुप पूर्ण रुप से स्पष्ट हो जाता है? कृष्ण केवल भक्ति ही नहीं, शक्ति, शौर्य, पराक्रम, नीति, ज्ञान, चेतना, सौन्दर्य, प्रेम, तत्व ज्ञान, कर्मयोग के भी देवाधिदेव हैं। जिन्हें भक्ति के साथ शाक्त रुप से आराधना कर प्राप्त किया जा सकता है, हृदय में उतारा जा सकता है, इसीलिए श्रीकृष्ण 'योगेश्वर' हैं, 'जगद्गुरु' हैं...

कृष्ण के नाम से आज समस्त विश्व परिचित है, शायद ही कोई ऐसा व्यक्तित्व होगा जो कृष्ण से परिचित न हो। जन-मानस में जो कृष्ण की छवि है, वह उन्हें ईश्वर होने से अथवा उनमें 'ईश्वरत्व' होने से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन कलाओं का आरम्भ ही अपने-आप में ईश्वर होने की पहचान है, फिर वे तो शोडश कला पूर्ण देव पुरुष हैं। यहाँ 'हैं' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि दिव्य अवतारी पुरुष सदैव मृत्यु से परे होते हैं। वे आज भी जन-मानस में जीवित हैं ही।

भिन्न-भिन्न स्थानों पर आज भी 'कृष्णलीला', 'श्रीमद्भागवत् कथा' तथा 'रासलीला' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृष्ण के जीवन पर तथा उनके कार्यों पर प्रकाश डाला जाता है।

किन्तु सत्य को न स्वीकार करने की तो जैसे परम्परा ही बन गई है, इसीलिए तो आज तक यह विश्व किसी 'महापुरुष' अथवा 'देव पुरुष' का सही ढंग से आंकलन ही नहीं कर पाया। जो समाज उनकी उपस्थिति के समय उन्हें कितना जान पाया होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है।

सुदामा जीवन पर्यन्त नहीं समझ पाये कि जिन्हें वे केवल मित्र ही समझते थे, वे कृष्ण एक दिव्य विभूति है, और उनके माता-पिता भी हमेशा उन्हें अपने पुत्र की ही दृष्टि से देखते रहे, तथा दुर्योधन ने उन्हें हमेशा अपना शत्रु ही समझा। इसमें कृष्ण का दोष नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कृष्ण ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्णता के साथ ही जीया, कहीं वे 'माखन चोर' के रुप में प्रसिद्ध हुए तो कहीं, 'प्रेम' शब्द को सही रुप में प्रस्तुत करते हुए दिखाई दिए।

कृष्ण के जीवन में राजनीति, संगीत जैसे विषय भी पूर्णरुप से समाहित थे, और जब उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म को उतारा, तो उतारते ही चले गए और शोडश कला पूर्ण होकर 'पुरुषोत्तम' कहलाए। जहां उन्होंने प्रेम, त्याग और श्रद्धा जैसे दुरुह विषयों को समाज के सामने रखा, वहीं जब समाज में झूठ, असत्य, व्यभिचार और पाखंड का बोलबाला बढ़ गया, तो उस समय वे एक वीर पुरुष की तरह सामने आए। महाभारत युद्ध के दौरान जिस प्रकार से कृष्ण युद्धनीति, रणनीति तथा कुशलता का प्रदर्शन किया, वह अपने-आप में आश्चर्यजनक ही था।

कुरुक्षेत्र युद्ध के मैदान में जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को प्रदान किया, वह अत्यन्त ही विशिष्ट तथा समाज की कुरीतियों पर कड़ा प्रहार करने वाला है। उन्होंने अर्जुन का मोह भंग करते हुए कहा-

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्य भाषते।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डितः।।

'हे अर्जुन! तू कभी न शोक करने वाले व्यक्तियों के लिए शोक करता है, और अपने आप को विद्वान् भी कहता है, परन्तु जो विद्वान् होते हैं, वे जो जीवित हैं उनके लिए और जो जीवित नहीं हैं उनके लिए भी, शोक नहीं करते।'

इस प्रकार जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को दिया, वह अपने आप में प्रहारात्मक है और अधर्म का नाश करने वाला है।

कृष्ण ने अपने जीवनकाल में शुद्धता, पवित्रता एवं सत्यता पर ही अधिक बल दिया, अधर्म, व्यभिचार, असत्य के मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक जीवन को उन्होंने वध करने योग्य ठहराया, फिर वह चाहे परिवार का सदस्य ही क्यों न हो, और सम्पूर्ण महाभारत एक प्रकार से पारिवारिक युद्ध ही तो था।

कृष्ण स्वयं अपने मामा कंस का वध कर, अपने नाना को कारागार से मुक्त करवाकर उन्हें पुनः मथुरा का राज्य प्रदान किया, और जब वे

युवावस्था में आए तो शिशुपाल का वध किया, और निर्लिप्त भाव से रहते हुए कृष्ण ने धर्म की स्थापना कर सदैव सुकर्म को ही बढ़ावा दिया।

कृष्ण का यह स्वरुप समाज स्वीकार नहीं कर पाया, क्योंकि इससे उनके बनाए हुए नियम, जो कि स्वार्थ को बढ़ावा देने वाले थे, उन पर सीधा आघात था। समाज की झूठी मर्यादाओं को खंडित करने का साहस कृष्ण के बाद कोई दूसरा पुरुष नहीं कर पाया, क्योंकि जिस मार्ग पर कृष्ण ने चलाना सिखाया, वह अत्यन्त कंटाकाकीर्ण तथा पथरीला मार्ग है और उस पर चलने का साहस वर्तमान तक भी कोई नहीं कर पाया। इन्होंने अपने जीवन में सभी क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए वीरता को, कर्मठता को, सत्यता को विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

कृष्ण ज्ञानार्जन हेतु सांदीपन ऋषि के आश्रम में पहुंचे, तब उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण कर ज्ञानार्जित किया, गुरु सेवा की, साधनाएं की और साधना की बारीकियों व अध्यात्म के नये आयाम को जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। यह तो समय की विडम्बना और समाज की अपनी ही एक विचारशैली है, जो कृष्ण की उपस्थिति का यही मूल्यांकन न कर पाया।

कृष्ण के जाने के बाद ही भक्ति युग का प्रारम्भ हो गया और समाज ने समस्त ज्ञान चिन्तन को स्वार्थ की चाह में लपेट दिया। कृष्ण के रोचक प्रसंगों को सुना-सुना कर, उन्हें धन-प्राप्ति का एक जरिया बना दिया।

भक्ति का तात्पर्य तो यह होना चाहिए कि भक्त अपने इष्ट के इतना निकट आ जाए कि दोनों एकाकार हो जाएं, द्वैत भाव समाप्त होकर अद्वैत की स्थिति का निर्माण हो, जैसा कि मीरा ने किया, जैसा कि चैतन्य महाप्रभु ने किया। ये लोग निरन्तर कृष्ण की भक्ति भावना में निमग्न रहते हुए कृष्ण से एकाकार हो गये, उनमें द्वैत न होकर अद्वैत का भाव प्रबल हो गया, किन्तु इनके बाद के काल में कोई दूसरा कृष्ण-भक्त 'कृष्ण' नहीं बन सका, क्योंकि इस समाज ने भक्ति के विकृत रुप को अपनाया। भक्ति की निश्छलता को कायरता में, उदासीनता में, कर्म हीनता तथा अकर्मण्यता में परिवर्तित कर दिया, जिसे प्राप्त कर समस्त विश्व अधर्म, असत्य और पाखंड के दलदल में धंसता चला गया।

आज विश्व में खाली भक्ति ही, भक्ति के नाम दिखावे की तथा भक्ति की आड़ लेकर स्वार्थ सिद्धि की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है तो भक्ति रस में डूबकर कुछ कर दिखाने की, समाज में गहराई तक बैठी असत्य तथा पाखंड युक्त परम्पराओं को तोड़ने की, कृष्ण ने जिन मार्गों को जीवन में पूर्णता प्राप्त करने की बात कही है, उन मार्गों को जीवन में अपनाने की, क्योंकि केवल जोर से जय-जयकार करने से भक्ति का प्रदर्शन करने से अथवा बड़े-बड़े तिलक लगाकर भिख मांगने से ही भक्ति सिद्ध नहीं होती, यह तो भक्ति की विकृत अवस्था है।

यह कृष्ण भक्तों के जीवन की सार्थकता होगी कि वे उनके पद-चिन्हों पर चले, उन मार्गो पर चले, जिन पर कृष्ण ने स्वयं चलकर अपने आपको सोलह कला पूर्ण बनाया और वह मार्ग है साधना का, तप का, संयम का, त्याग का... और यह मार्ग पथरीला तथा कांटों से भरा अवश्य है, लेकिन जिस स्थान पर जाकर यह मार्ग पूर्ण होता है वह 'सिद्धाश्रम'। सिद्धाश्रम का अर्थ ही जीवन की पूर्णता है, सिद्धाश्रम का अर्थ ही शोडश कलाओं में पूर्ण होना है और सिद्धाश्रम ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है।

कृष्ण की प्रमुख इच्छाओं में से एक इच्छा यह थी, कि वे किसी प्रकार सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें, और वे अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए रुके नहीं, उन्होंने अथक प्रयास कर अपनी साधना के बल पर सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त किया... और आज वे सिद्धाश्रम में श्रेष्ठ और उच्चकोटि के योगी के रुप में विद्यमान हैं, जिन्हें विश्व 'जगद्गुरु' के रुप में स्वीकार करता है। वे जगद्गुरु थे आज भी हैं और आने वाले युग में भी रहेंगे, तभी तो इन्हें 'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं' कहा गया।

♦♦♦

शनि पीड़ा से निवारण

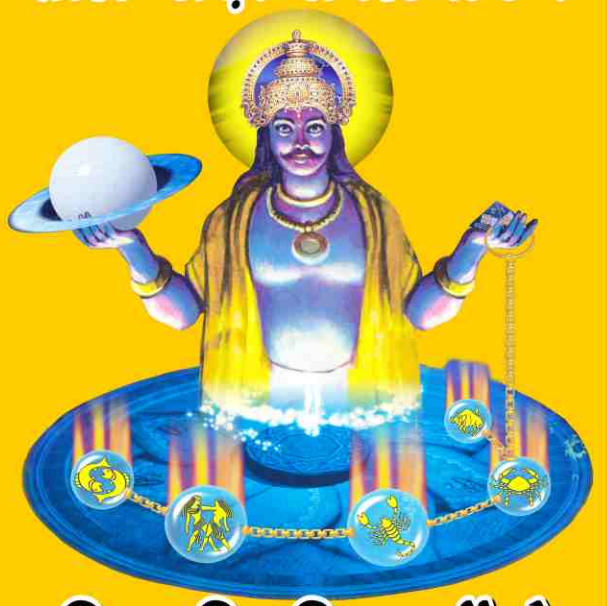

शनि शान्ति विधान पैकेट

शनि की महिमा बड़ी निराली है। शनि नाम है पीड़ा का, दुःख का। लेकिन वहीं शनि भौतिक सुखदाता भी है। शनि भाग्य बिगाड़ता है तो संवारता भी है। सूर्यपुत्र शनिदेव जिनके पराक्रम से मनुष्य तो क्या देवता भी घबराते हैं। शनि यदि प्रसन्न हो जाये तो रंक को राजा बना दे और क्रुद्ध हो जाये तो राजा को रंक। आईये! शनि जयन्ती पर हम भी शनि देव को प्रसन्न कर शनि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त करें।

याद रखिये! सौभाग्यशाली अवसर बार-बार नहीं आते।

शनि शान्ति विधान पैकेट में आप पायेंगे

1.शनि पुरुषाकार यंत्र 2. शनि माला 3.शनि तैतीसा यंत्र+महामृत्युंजय यंत्र 4.पुतला छत पर लटकाने के लिये 5. घोड़े की नाल 6.शनि का छल्ला 7.पारद शिवलिंग 8.शनि यंत्र पिरामिड 9.शनि शान्ति के मंत्र-स्तोत्र-अष्टक आदि की पॉकेट पुस्तक 10.शनि से संबंधित उपायों की सी.डी.।

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सभी सामग्री एक साथ मात्र 3500 रु में

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org